श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

॥ सुयं मे आउसं ॥

विक्रम संवत २०७९ • वर्ष : ७ • अंक : १ • जून २०२३

धरोहर

जयपुर में **संजय सिंघल** नाम के उद्योगपति रहते है। उनकी सिक्योर मिटर नाम की कंपनी है। रिटायर होने के बाद उन्होंने देश के लिए कुछ करना है यह विचार किया। उनको बचपन से ही संस्कृत और संस्कृति में रुचि थी। २०१८ में वानकुंवर, कनाडा में विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उत्सुकतावश वे उसमें भाग लेने गए। वहां उन्होंने विभिन्न विद्वानों और कार्यकर्ताओं से पूछा कि- संस्कृत के क्षेत्र में काम करने में सबसे बड़ी समस्या क्या है? उन्हें उत्तर मिला कि- संस्कृत भाषा की पाण्डुलिपियाँ आसानी से उपलब्ध नहीं होती हैं। संस्कृत भाषा का ज्ञान पाण्डुलिपियों में छिपा है। उसे उपलब्ध कराने की कोई व्यवस्था नहीं है। सिंघल भारत आए। उन्होंने पाण्डुलिपियों की स्थिति का अभ्यास किया। उन्होंने स्वयं अनेक पाण्डुलिपि भण्डारों की मुलाकात की। उन्होंने महसूस किया कि जिनके पास पाण्डुलिपियाँ हैं, उनके पास उन्हें संरक्षित करने या उन्हें उपलब्ध कराने के कोई साधन नहीं हैं। उसके लिए कोई फंड नहीं है। इस समस्या को हल करने के तरीकों की जाँच की। खूब मंथन किया और खुद रास्ता निकालने का सोचा। उन्होंने एक दीर्घकालीन योजना बनाई। लक्ष्य निर्धारित किया। समयसीमा निर्धारित की। उपाययोजना के बारे में सोचा। इसके लिए उन्होंने खुद पैसों का इंतजाम किया। अपने जीवनभर की कमाई का एक बड़ा हिस्सा इस काम में लगाने का फैसला किया। एक संस्था बनाई- 'धरोहर'। धरोहर का अर्थ है विरासत, नींव। इस संस्था के अंतर्गत पुन: पाण्डुलिपियों के क्षेत्र में कार्यरत सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की मुलाकात की। उनकी कार्यप्रणाली का अध्ययन कीया। फिर खुद ही एक विशेष सॉफ्टवेयर डेवलप किया। मोबाइल फोन से पाण्डुलिपियों को स्कैन कर सके ऐसा एक प्रोग्राम बनाया। www.sangrah.org नाम से वेबसाइट बनाई। इस वेबसाइट पर वर्तमान में ५००० पाण्डुलिपियों की जानकारी उपलब्ध है। इसमें पाण्डुलिपिओं की विवरणात्मक जानकारी है। इस कार्य में कठिनाई यह थी कि- यदि पाण्डुलिपि का प्रथम या अन्तिम पृष्ठ न हो तो यह कौन-से ग्रंथ की पाण्डुलिपि है? या इसमें लिखे शास्त्र का नाम क्या है? यह नहीं पता चलता है। इसके लिए उन्होंने संदर्भ डेटा तैयार किया। अत: मध्य पृष्ठ के वाक्यों का मिलान करके शास्त्र का नाम ज्ञात किया जा सकता है। यह डेटा निजी नहीं रखा गया। इसे वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिया गया है। इसके आधार पर कोई भी व्यक्ति अधूरी पाण्डुलिपि में लिखे शास्त्र का नाम पता कर सकता है।

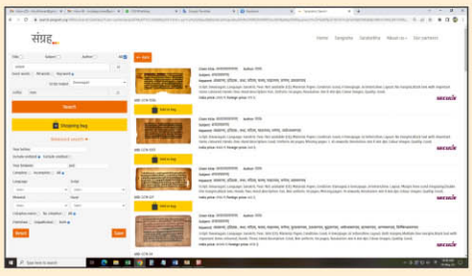

धरोहर द्वारा अब तक ५००० पाण्डुलिपियों को स्कैन किया जा चुका है और उनका लक्ष्य आनेवाले वर्षों में २५ लाख पाण्डुलिपियों की जानकारी उपलब्ध कराने का है।

दि. १ मई २०२३ को पुणे स्थित गोळवलकर गुरुजी विद्यालय के गणेश सभागृह में सायं ४.३० बजे इस वेबसाईट के उद्घाटन का समारोह संपन्न हुआ। इस समारोह में राम जन्मभूमि न्यास के विश्वस्त स्वामी **गोविंददेवगिरिजी महाराज** उद्घाटक के रूप में तथा पुणे विद्यापीठ के संस्कृत विभाग से निवृत्त **प्रा. सरोजा भाटे** प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। भारत सरकार के सांस्कृतिक राज्यमंत्री मा. **अर्जुन रामजी मेघवाल** झूम के माध्यम से समारोह में सहभागी हुए।

इस समारोह में श्रुतभवन से सर्वश्री **अमितकुमार उपाध्ये**, **अमोघ प्रभुदेसाई**, **मदनदेव डोंगरे**, **चिंतामणि सूर्यवंशी**, **प्रभाकर बोधने** और **लहु माने** उपस्थित थे। विश्वस्त **श्री. राजेंद्रजी बाठिया** और **श्री नरेंद्रजी छाजेड** भी उपस्थित थे।

अपरिचित क्षेत्र, सीमित ज्ञान, मदद की कमी, स्थानीय और संगठनात्मक मुद्दों के बावजूद एक व्यक्ति- हाँ, सिर्फ एक व्यक्ति- गांठ का गोपीचंदन करके पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने के लिए दिन-रात एक कर रहा है यह जानकर आनंद होता है और आशा भी जगती है कि ऐसा समर्पित व्यक्ति जैनशासन में भी देखने को मिले।

विविध धर्मपरंपराओं के अनुसार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' चर्चासत्र में सहभाग

वर्ष २०२३ के उत्तरार्ध में होनेवाले २० राष्ट्रों के शिखर सम्मेलन का अध्यक्षस्थान भारत को प्राप्त हुआ है। इस सम्मेलन में विविध सामाजिक समस्याओं पर अपनी नीतियाँ (Policies) निर्धारित कर सभासद राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के सामने प्रस्तुत की जायेंगी।

इस संदर्भ में भारत सरकार द्वारा २० अशासकीय संस्थाओं के समूह का C20 नाम से गठन किया गया है। ये संस्थाएँ देशभर में विविध विषयों के विद्वानों को बुलाकर चर्चासत्रों का आयोजन कर रही हैं। विद्वानों के द्वारा मिलने वाले सुझावों के आधार पर भारत सरकार विविध प्रश्नों पर अपनी नीतियाँ तैयार कर G20 प्रतिनिधियों के सामने रखेगी।

इसी संदर्भ में C20 समूह की सभासद संस्था 'विवेकानंद केंद्र' के पुणे विभाग द्वारा दि. २४ अप्रैल से २७ अप्रैल २०२३ तक विविध विषयों पर Policy Dialogues का आयोजन किया गया था। २७ अप्रैल २०२३ को 'वसुधैव कुटुम्बकम् - विविध धार्मिक

परंपराओं की दृष्टि से' (Vasudhaiv Kutmbakakam - Scriptural Perspective of Various Religious Traditions) इस विषय पर चर्चासत्र का आयोजन किया गया था। इस चर्चासत्र में

श्रुतभवन की ओर से **श्री अमोघ प्रभुदेसाई** सहभागी हुए और **'जैन धर्म की दृष्टि से वसुधैव कुटुम्बकम् और शांततामय सह-अस्तित्व'** इस विषय पर प्राचीन ग्रंथों के आधार से विचार प्रकट किये।

अपने वक्तव्य में उन्होंने जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद इन सिद्धांतों पर जोर दिया। जैन धर्म की अहिंसा केवल मनुष्यजाति तक सीमित नहीं है, वरनमनुष्येतर जीवों के रक्षण का भी खयाल जैन धर्म करता है। वसुधैव कुटुम्बकम् यह विचार मनुष्येतर जीवों के संरक्षण के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। मनुष्येतर जीव मनुष्य के उपभोग के लिए बनाए गये हैं इस प्रकार की उपभोगवादी दृष्टि जैन धर्म नहीं अपनाता। ऐसी आत्यंतिक अहिंसा ही वसुधैव कुटुम्बकम् के लक्ष्य को सिद्ध कर सकती है। लोगों के बढ़ते परिग्रह और उपभोगवादी वृत्ति के कारण पर्यावरण का नाश हो रहा है। जमीन, पानी, तेल आदि के लोभ से राष्ट्रों में परस्पर संघर्ष बढ़ रहा है। इससे वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना को हानि पहुँच रही है। ऐसे में अपरिग्रह का जैन सिद्धांत काम आ सकता है। अपनी जरूरतें कम रखने से, जरूरत से अधिक संग्रह न करने से और अपने साथ साथ अन्यों की जरूरतों का भी विचार करने से शांततामय सहअस्तित्व दृढ हो सकता है। साथ ही, शांततामय सहअस्तित्व के उद्देश्य में अनेकान्तवाद भी उपयुक्त साबित होगा। एकान्तवाद से संघर्ष बढ़ता है। लेकिन अनेकान्तवाद ऐडजस्टमेंट, सामंजस्य और सहिष्णुता सिखाता है, जो वसुधैव कुटुम्बकम् की संकल्पना को व्यवहार में लाने में आवश्यक हैं।

इस चर्चासत्र में कुल ९ धर्मों के विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये, जिसमें जैन धर्म के साथ ख्रिश्चन, पारसी, यहूदी, इस्लाम, सिख, बौद्ध और वैदिक-हिंदू परंपराओं के प्रतिनिधि शामिल थे।

इस चर्चासत्र का अध्यक्षस्थान रामकृष्ण मठ, पुणे के अध्यक्ष स्वामी **श्रीकांतानंदजी** महाराज ने निभाया। अपने वक्तव्य में उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम् की दृष्टि से सभी धर्मों के लोगों ने अन्य एक-दूसरे का आदर करने की आवश्यकता पर जोर दिया। हर धर्म में एक कर्मकांड का भाग होता है और दूसरा मूलभूत शाश्वत सिद्धांत का। हमें कर्मकांडों के साथ उन शाश्वत तत्त्वों की ओर ध्यान देना चाहिए ऐसा प्रतिपादन उन्होंने किया।

इस चर्चासत्र में सहभागी होना अनेक प्रकार से लाभदायक रहा। अपने देश की अंतरराष्ट्रीय नीतियों के निर्माण के लिए सुझाव देने का अवसर मिलना अपने आपमें गौरवास्पद है। साथ ही अन्य धर्मों के विद्वानों से मिलना और उनके वक्तव्य सुनना ज्ञानवर्धक रहा। उपस्थित विद्वानों को श्रुतभवन के बारे में जानकारी दी। श्रुतभवन में चल रहा कार्य जानकर सभी प्रसन्न हुए और इस प्रकार के प्राचीन ज्ञान के संरक्षण कार्य की उन्होंने अनुमोदना भी की।

समाचार - पदार्पण

प. पू. आ. श्री युगचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

दि. २०-०२-२०२३ सोमवार के शुभदिन सिद्धहस्तसाहित्यसर्जक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी** म.सा. के पट्टधर प्रवचन श्रुततीर्थ प्रेरक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **युगचंद्रसूरीश्वरजी** म.सा. आदि श्रुतभवन अवलोकनार्थ पधारे। वर्तमान कार्य और गतिविधियों को देखकर अति प्रसन्न हुए।

पूज्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा....

'श्रुतभवन' का एक दिन की क्षेत्र-स्पर्शना आनंदमय रही। गणिवर श्री वैराग्यरतिविजयजी महाराज साहेब के साथ आत्मीयताभरी बैठक में 'श्रुत' की वर्तमान स्थिति-परिस्थिति के बारे में गंभीरता से विचार-विमर्श हुआ । 'श्रुतरक्षा' के प्रयास में परस्पर सहयोग प्रदान करने की काफी उदारता दिखाई दी। आप सभी बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको 'श्रुत' के काम का हिस्सा बनने का अवसर मिला।

प. पू. आ. श्री यशोविजयसूरीश्वरजी म.सा.

रविवार दि. १२-०३-२०२३ के दिन भक्तियोगाचार्य गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजय **यशोविजयसूरीश्वरजी** म.सा. आदि ९६ साधु-साध्वीजी भगवंत के पावन पदार्पण से श्रुतभवन संशोधन केंद्र की उर्जा पवित्र बनी। पूज्यश्री वर्तमान कार्य और गतिविधियों को देखकर अति प्रसन्न हुए। पूज्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा....

आज श्रुतभवन आए। देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि हमारी प्राचीन धरोहर का कितने सुंदर ढंग से संरक्षण/ संवर्धन करने का प्रयत्न विद्वद्वर्य वैराग्यरतिविजयजी म. के तत्त्वावधान में हो रहा है। श्रुतसेवा की यह प्रवृत्ति खूब विकास साधे यही मन:कामना।

प. पू. आ. श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा.

दि. १०-०४-२०२३ के दिन श्रुतसमुद्धारक, प्राचीन हस्तप्रतों के संरक्षक, श्री महावीर जैन आराधना केंद्र - कोबा के प्रेरक, राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् **पद्मसागरसूरीश्वरजी** म.सा. अपने परिवार के साथ श्रुतभवन में पधारे। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में हस्तप्रत संरक्षण की प्रेरणा का इतिहास प्रस्तुत किया।

पूज्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा....

श्रुतभवन में आने का शुभ अवसर मिला। यहां ज्ञान के क्षेत्र में जो कार्य चल रहा है, जानकर प्रसन्नता हुई। जैन संघ में इस प्रकार के कार्य में सहयोग मिले तो इस कार्य का सुंदर विकास होगा। संस्था अपने कार्य में सुंदर सफलता प्राप्त करे यही मेरी शुभकामना.....

प. पू. ग. श्री मयंकप्रभसागर म.सा. तथा प.पू. आर्य मेहुलप्रभसागर म.सा.

दि. १६-०४-२०२३, रविवार के शुभदिन खरतरगच्छ के परम पूज्य गणिवर्य **मयंकप्रभसागरजी** म.सा. और परम पूज्य आर्य **मेहुलप्रभसागरजी** म.सा. श्रुतभवन पधारे।

पूज्य गुरुदेव के साथ श्रुत के विषय में चर्चा विमर्श हुआ।

पूज्यश्री ने अपने आशीर्वचन में कहा.... पूज्य गणिवर्य **वैराग्यरतिविजयजी** महाराज वर्षों से निरंतर यहां भागीरथ कार्यों में मार्गदर्शक है। स्नेह-वात्सल्यपूर्ण भावों के साथ श्रुत-सेवा के संप्रेरक गणिवर्यजी से नानाविध प्रकल्पों के बारे में विस्तृत जानकारी संप्राप्त कर मन अत्यंत प्रमुदित है। वर्धमान जिनरत्न कोश में अनेक कृतियों का अन्वेषण कर संवर्धन करना स्तुत्य है।

यह प्रकल्प वर्तमान पीढी के साथ आनेवाली पीढीयों के लिए मार्गदर्शक होगा।

दि. १९ मार्च २०२३ के दिन मणिमाजी परिवार के सदस्य श्रुतभवन अवलोकनार्थ पधारे। सभी ने श्रुतभवन के वर्तमान कार्य और गतिविधियों का अवलोकन किया। परिवार के द्वारा लाभ लिये गये ११ सूचिपत्रों का विमोचन परिवार के सदस्यों के द्वारा हुआ। श्रुतभवन के ट्रस्टीओं द्वारा परिवार का बहुमान किया गया।

दिनांक	पूजन	लाभार्थी
४-४-२३	श्री वर्धमान विद्या पूजन	सीटी वुड यात्रा ग्रुप, सेलेसबरी पार्क
६-४-२३	श्री सिद्धचक्र पूजन	श्री अमितजी दिनेशजी परमार, कोंढवा
३०-४-२३	श्री वर्धमान विद्या पूजन	श्री अमितजी दिनेशजी परमार, कोंढवा
१९-५-२३	श्री महावीरजिन मंगल पूजा	सौ. लताबेन विजयभाई निबजिया, सेलेसबरी पार्क

प्रीतिसंगम पर्व

दि. ७-५-२०२३ रविवार के दिन संयम धर्म और श्रुतधर्म की अनुमोदना के रूप में **प्रीतिसंगम पर्व** मनाया गया। परिचितों ने पूज्य गुरुदेव की गुण स्तवना की।

इस अवसर पर **श्री विजयजी भंडारी** (उपाध्यक्ष जितो), **श्री मिलिंदजी फडे**, **श्री जिनेंद्र लोढा**, **श्री चेतनजी भंडारी**, **श्री दिनेश ओसवाल जिरावाला**, **श्री मंगेशजी कटारिया**, **श्री दिलीपजी विनायकीया**, **श्री पंकजजी कर्नावट**, **श्री सुजीतजी भटेवारा**, **श्री संजयजी राठोड**, **श्री अभिजितजी डुंगरवाल**, **श्री अमितजी सोलंकी**, **श्री आनंदजी चोरडिया**, **श्री रोहितजी बोराना**, **श्री राहुलजी संचेती**, **श्री संदीपजी खिंवसरा**, **श्री अमोलजी कुचेरिया** आदि जितो मेंबर, **श्री जयंतीभाई शाह** (चोईस परिवार), **श्री अशोकभाई निबजिया** (कोल्हापूर), **श्री दिनेशजी महेता** (डिवाईन), **श्री दिपकजी महेता**, **श्री संजयजी गांधी**, **श्री फूलचंदजी**, **श्री सुरेंद्रजी ओस्तवाल**, **श्री रमेशजी गांधी**, **श्री हसमुखभाई राठोड** आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्रुतभवन द्वारा प्रकाशित दस ग्रंथों के सेट का तथा मृत्यु का मेनेजमेंट (हिंदी) और वनवगडे विहरे वीर (गुज.) आदि किताबों का विमोचन हुआ।

श्रुतभवन प्रस्तुति

दि. २१-५-२०२३ रविवार के दिन पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय **महाबोधिसूरीश्वरजी** म.सा. के निश्रा में महाराष्ट्र राज्य विहार सेवा ग्रुप के वार्षिक संम्मेलन का आयोजन किया था। संम्मेलन में करीबन एक हजार युवक सहभागी हुए थे। पूज्य आचार्यश्री ने श्रुतभवन के बारे में सभी को जानकारी दी। वहाँ पर **श्रुतभवन प्रस्तुति स्टोल** लगाया गया था।

उपमितिभवप्रपंच कथा का प्राकट्य दिन

दि. २४-०५-२०२३ बुधवार के दिन श्रुतभवन में **उपमितिभवप्रपंच कथा** इस ग्रंथ का प्राकट्य दिन मनाया गया। पूज्य गुरुदेव ने इस ग्रंथ के प्राकट्य तथा ग्रंथकार के बारे में सभी को जानकारी दी।

लिपि अध्ययन

सा. श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म., सा. श्री **मधुरहंसाश्रीजी** म. तथा सा. श्री **धन्यहंसाश्रीजी** म. ने **२१ साध्वीजी** भगवंतों को प्राचीन देवनागरी लिपि सिखाई।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत **उपा. श्रीविनयविजयजी कृतिसंग्रह, पं.श्रीनेमकुशलजी कृतिसंग्रह, पृथ्वीचंद्रचरित्र, गौतमस्वामी स्तोत्र सह टीका, छंदविषयक ग्रंथ, प्राकृत लघुकृतिसंग्रह** आदि ग्रंथों का संपादन कार्य प्रवर्तमान है। पू.सा.**श्री मधुरहंसाश्रीजी म. जयंतिश्राविकासंधि**, आत्मनिंदा इन ग्रंथों का लिप्यंतर कर रहे हैं। पू.सा.श्री **धन्यहंसाश्रीजी म. पार्श्वजिनस्तव** ग्रंथ का लिप्यंतर कर रहे हैं। अभ्यास वर्ग प्रकल्प में विभिन्न ग्रंथों के संपादनविधा की पद्धति का अध्ययन प्रवर्तमान है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.** म., पू. आ. श्री **हर्षसागरसू.** म., पू. आ. श्री **हर्षवर्धनसू.** म., पू. पं. श्री **मुक्तिकल्याणवि.** म., पू. मु. श्री **धर्मरत्नवि.** म., पू. मु. श्री **शीलचंद्रवि.** ग., पू. मु. श्री **वंदनरुचिवि.** म., पू. मु. श्री **चंद्रदर्शनवि.** म., पू. मु. श्री **विमलयशवि.** म., पू. मु. **श्री मंगलयशवि.** म., पू. मु. श्री **भव्यसुंदरवि.** म., पू. मु. श्री **तीर्थयशवि.** म., पू. मु. श्री **प्रभुशासनरत्नवि.** म., पू. मु. श्री **दीपरत्नसागरजी** म., पू. मु. श्री **असंगयोगवि.** म., **प्रा. पीटर फ्लुगल** तथा **डॉ. शीतल शाह** को हस्तप्रत संबंधि माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

झेटस् कॉस्मेटिक्स् प्रा. लि., मुंबई
श्री मुकुंद भवन ट्रस्ट, पुणे
श्री हरेनभाई कांतिलाल शाह, पुणे
जयप्रकाश फाउंडेशन, पुणे
श्री अभयजी श्रीश्रीमाळ, अभूषा फाउंडेशन, चेन्नई
श्री आदिनाथ सोसायटी जैन टेंपल ट्रस्ट, पुणे
श्री मुलुंड श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ, मुंबई
श्री हसमुखलाल चुनिलाल मोदी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई
झुंबरबेन कीर्तिकुमार ओसवाल, पुणे
श्री कच्छ विशा ओसवाल जैन महाजन, कच्छ
श्री कुंजल शैलेशभाई शाह, अहमदाबाद
सौ. कविताबेन रितेशभाई कोठारी, पुणे
श्रीमती वसंतप्रभाबेन कांतिलाल शाह, पुणे
श्री कमलनयन कांतिलाल शाह, पुणे
श्री सुरेशभाई शेठ, पुणे
सौ. उर्वशीबेन डी. शाह, पुणे
श्री सुधीरभाई एस. कापडिया, मुंबई
श्री महावीर स्वामी जैन देरासर, मुंबई
श्री भीमराजजी वीरचंद बाठिया, पुणे
श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ जैन देरासर ट्रस्ट, मुंबई

चातुर्मास स्थल और संपर्कसूत्र

श्रुतरत्न पूज्य गणिवर
श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा.
सुजय गार्डन जैन संघ,
सुजय गार्डन, मुकुंदनगर, पुणे-४११०३७
मो. ७७४४९८०२५६

पूज्य मुनिराज श्री प्रशमरतिविजयजी म.सा.
Shree Nandprabha Jain Tirth Bhumi Bhakti Trust.
Near Jain Temple, Barakar, Post- Palmo,
Ps- Mufassil, Giridih (Jharkhand) Pin-825108.
Pankaj Kumar - 8521558265

पूज्य सा. श्री जिनरत्नाश्रीजी म.सा. आदि
सुजय गार्डन जैन संघ,
सुजय गार्डन, मुकुंदनगर,
पुणे-४११०३७

सुवाक्य

उद्यमथी जलबिंदुओ ए, करे पाषाणमां ठाम तो।
उद्यमथी विद्या भणइ ए, उद्यम जोडइ दाम तो ॥५.१०॥
उपाध्याय श्री विनयविजयजी विरचित
श्री वर्धमानजिन स्तवन (पंचकारण गर्भित)

निरन्तर प्रयास करने से पानी का बिन्दु पथ्थर में जगह बना लेता है।
निरन्तर प्रयास करने से ही विद्या प्राप्त होती है।
निरन्तर प्रयास करने से ही धन प्राप्त होता है।

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutdeep.com

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel
Shrutbhavan Pune